भगत कबीर – सबद ३४

बेद की पुत्री सिंमृति भाई ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२९

बेद की पुत्री सिंमृति भाई ॥
साँकल जेवरी लै है आई ॥१॥
आपन नगरु आप ते बाधिआ ॥
मोह कै फाधि काल सरु साँधिआ ॥१॥ रहाउ ॥
कटी न कटै तूटि नह जाई ॥
सा सापनि होइ जग कउ खाई ॥२॥
हम देखत जिनि सभु जगु लूटिआ ॥
कहु कबीर मै राम कहि छूटिआ ॥३॥३०॥

सार: जब जीवन के सार को समझने वाली सोच और समझ, कड़े नियमों और बंदिशों में बदल जाती है तब वह वास्तविक समझ को सीमित कर, धीरे-धीरे केवल रूढ़िवादी सिद्धांत बन जाती हैं। जो बोध हमें मुक्त करने के लिए है, वही बंधन बन सकता है अगर हम उसे स्वयं को जानने की यात्रा के बजाय सिर्फ़ नियमों का पालन करने का तरीका मान लें। हालाँकि नियम ढाँचा तो देते हैं लेकिन अकसर वह उन अनुभवों को धुंधला कर देते हैं जिनसे सच्ची समझ मिलती है। इससे हम अपनी सोच और विरोधाभासों को समझने के बजाय, बस तय किए गए व्यवहारों की नक़ल करने लगते हैं, यह विरोधाभास ही हमारी वास्तविक समझ को अपनाने की क्षमता को रोकते हैं। जो हमें प्रेरित कर सकती थी, वही भीड़ का हिस्सा बनने की होड़ में हमारी असली पहचान को दबा सकती है। वास्तविक मुक्ति तब मिलती है जब हम सत्य का सीधे सामना करते हैं और उसे अपनी चेतना को रूपांतरित करने तथा अपने कर्मों का मार्गदर्शन करने देते हैं।

बेद की पुत्री सिंमृति भाई ॥

स्मृति, धार्मिक क़ानून और सामाजिक व्यवस्था को नियंत्रित करने वाला दार्शनिक ग्रंथ, हे साथी, यह ग्रंथ वेद से ही आया है। यह दर्शाता है कि जब सत्य की निर्मल खोज को विरासत में मिले नियमों, निर्धारित वर्गीकरणों और आचार-संहिताओं में औपचारिक रूप देकर बदल दिया जाता है तब वह रूढ़िवादी सिद्धांत बन जाती है।

साँकल जेवरी लै है आई ॥१॥

वह अपने साथ ज़ंजीरें और फंदा लेकर आई है। यह उन निर्मित सीमाओं की ओर संकेत करता है जो पहचान को लेकर डर और बाध्यता पैदा करती हैं, साथ ही ऐसे रीति-रिवाजों की ओर भी, जो जागरूकता और आंतरिक स्वतंत्रता को सीमित करते हैं। (१)

आपन नगरु आप ते बाधिआ ॥

अपने नगर को स्वयं ही बाँध लिया है। यह आत्म-निर्मित क़ैद की ओर संकेत करता है जिसमें मन को मुक्त करने वाला दर्शन तब उल्टा काम करता है जब उसे अंतर्दृष्टि के बजाय केवल एक निश्चित नियमावली के रूप में समझा जाता है।

मोह कै फाधि काल सरु साँधिआ ॥१॥ रहाउ ॥

मोह के फंदे ने विनाश को न्योता दिया। यह दर्शाता है कि कैसे किसी से जुड़ने या पहचान बनाने की भावना मन को ज्ञान की ओर ले जाने के बजाय असुरक्षा की भावना से विनाश कर सकती है। (१)(विराम)

कटी न कटै तूटि नह जाई ॥

यह काटने पर कटता नहीं, न ही टूटता है। यह ऐसी मानसिक जकड़न को दिखाता है जहाँ ज़िम्मेदारी, डर, अपराध-बोध और उम्मीदें हमारे मन में इतनी गहराई से जुड़ी होती हैं कि वह अकसर हमारे कर्मों में भी झलकती हैं।

सा सापनि होइ जग कउ खाई ॥२॥

वह फंदा एक साँप बनकर दुनिया को निगल जाता है। यह रूपक बताता है कि कैसे मोह-माया, साँप की तरह, हमारी सोच को कसकर जकड़ लेती है और हमारे असली आंतरिक स्वरूप की स्पष्टता को दबा देती है। (२)

हम देखत जिनि सभु जगु लूटिआ ॥

हमारी आँखों के सामने ही इसने पूरी दुनिया को लूट लिया है। यह साक्षी देखता है कि कैसे कठोरता जीवन की सहजता, आज़ादी और आंतरिक स्पष्टता को छीन सकती है।

कहु कबीर मै राम कहि छूटिआ ॥३॥३०॥

कबीर कहते हैं कि सर्वव्यापी सत्ता के सार को समझकर और उसे व्यक्त करके, मुझे मुक्ति मिली। यह आज़ादी मन में संकीर्ण मोह से व्यापक एकता की ओर बदलाव को दर्शाती है। (३)(३०)

तत्त्व: भगत कबीर आज़ादी को आंतरिक बदलाव के रूप में परिभाषित करते हैं जो हमें मोह की बेड़ियों से मुक्त करता है और हमारी स्वाभाविक एकता को उजागर करता है। जैसे-जैसे हम अधिकार-भावना, डर और जीवन की अनिश्चितताओं को नियंत्रित करने की इच्छा से आगे बढ़ते हैं, हम जीवन को अलग-अलग हिस्सों के बजाय, परस्पर रूप से जुड़े हुए संपूर्ण रूप में देखने लगते हैं। यह बदलाव आत्म-केंद्रित सोच से व्यापक जागरूकता की यात्रा का प्रतीक है जहाँ अपनापन, करुणा और एकता स्वाभाविक रूप से पनप सकते हैं। आज़ादी के इस नज़रिए को अपनाने से हमारा सामूहिक अनुभव बेहतर होता है और हमारा जीवन समृद्ध होता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com